।।श्रीहरिः।।

1018

नवग्रह

गीताप्रेस, गोरखपुर
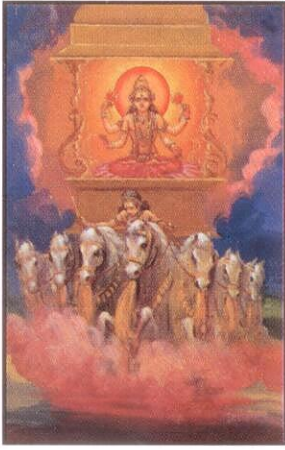
सूर्य

सूर्यदेवकी दो भुजाएँ हैं, वे कमलके आसनपर विराजमान रहते हैं; उनके दोनों हाथोंमें कमल सुशोभित हैं। उनके सिरपर सुन्दर स्वर्णमुकुट तथा गलेमें रत्नोंकी माला है। उनकी कान्ति कमलके भीतरी भागकी-सी है और वे सात घोड़ोंके रथपर आरूढ़ रहते हैं।

सूर्य देवताका एक नाम सविता भी है, जिसका अर्थ है—सृष्टि करनेवाला 'सविता सर्वस्य प्रसविता' (निरुक्त १०। ३१)। ऋग्वेदके अनुसार आदित्य-मण्डलके अन्तःस्थित सूर्य देवता सबके प्रेरक, अन्तर्यामी तथा परमात्मस्वरूप हैं। मार्कण्डेय पुराणके अनुसार सूर्य ब्रह्मस्वरूप हैं, सूर्यसे जगत् उत्पन्न होता है और उन्हींमें स्थित है। सूर्य सर्वभूतस्वरूप सनातन परमात्मा हैं। यही भगवान् भास्कर ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र बनकर जगत्का सृजन, पालन और संहार करते हैं। सूर्य नवग्रहोंमें सर्वप्रमुख देवता हैं।

जब ब्रह्मा अण्डका भेदन कर उत्पन्न हुए, तब उनके मुखसे 'ॐ' यह महाशब्द उच्चरित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही भगवान् सूर्यदेवका शरीर है। ब्रह्माके चारों मुखोंसे चार वेद आविर्भूत हुए, जो तेजसे उदीप्त हो रहे थे। ओंकारके तेजने इन चारोंको आवृत कर लिया। इस तरह ओंकारके तेजसे मिलकर चारों एकीभूत हो गये। यही वैदिक तेजोमय ओंकारस्वरूप सूर्य देवता हैं। यह सूर्यस्वरूप तेज सृष्टिके सबसे आदिमें पहले प्रकट हुआ, इसलिये इसका नाम आदित्य पड़ा।

एक बार दैत्यों, दानवों एवं राक्षसोंने संगठित होकर देवताओंके विरुद्ध युद्ध ठान दिया और देवताओंको पराजित कर उनके अधिकारोंको छीन लिया। देवमाता अदिति इस विपत्तिसे त्राण पानेके लिये भगवान् सूर्यकी उपासना करने लगीं। भगवान् सूर्यने प्रसन्न होकर अदितिके गर्भसे अवतार लिया और देवशत्रुओंको पराजित कर सनातन वेदमार्गकी स्थापना की। इसलिये भी वे आदित्य कहे जाने लगे।

भगवान् सूर्यका वर्ण लाल है। इनका वाहन रथ है। इनके रथमें एक ही चक्र है, जो संवत्सर कहलाता है। इस रथमें मासस्वरूप बारह अरे हैं, ऋतुरूप छः नेमियाँ और तीन चौमासे-रूप तीन नाभियाँ हैं। इनके साथ साठ हजार बालखिल्य स्वस्तिवाचन और स्तुति करते हुए चलते हैं। ऋषि, गन्धर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस और देवता सूर्य नारायणकी उपासना करते हुए चलते हैं। चक्र, शक्ति, पाश और अंकुश इनके मुख्य अस्त्र हैं।

भगवान् सूर्य सिंह राशिके स्वामी हैं। इनकी महादशा छः वर्षकी होती है। सूर्यकी प्रसन्नता और शान्तिके लिये नित्य सूर्यार्घ्य देना चाहिये और हरिवंशपुराणका श्रवण करना चाहिये। माणिक्य धारण करना चाहिये तथा गेहूँ, सवत्सा गाय, गुड़, ताँबा, सोना एवं लाल वस्त्र ब्राह्मणको दान करना चाहिये। सूर्यकी शान्तिके लिये वैदिक मन्त्र—*'ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥'*, पौराणिक मन्त्र—*'जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥'*, बीज मन्त्र—*'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'* तथा सामान्य मन्त्र—*'ॐ घृणि सूर्याय नमः'* है। इनमेंसे किसी एकका श्रद्धानुसार एक निश्चित संख्यामें नित्य जप करना चाहिये। जपकी कुल संख्या ७००० तथा समय प्रातःकाल है।
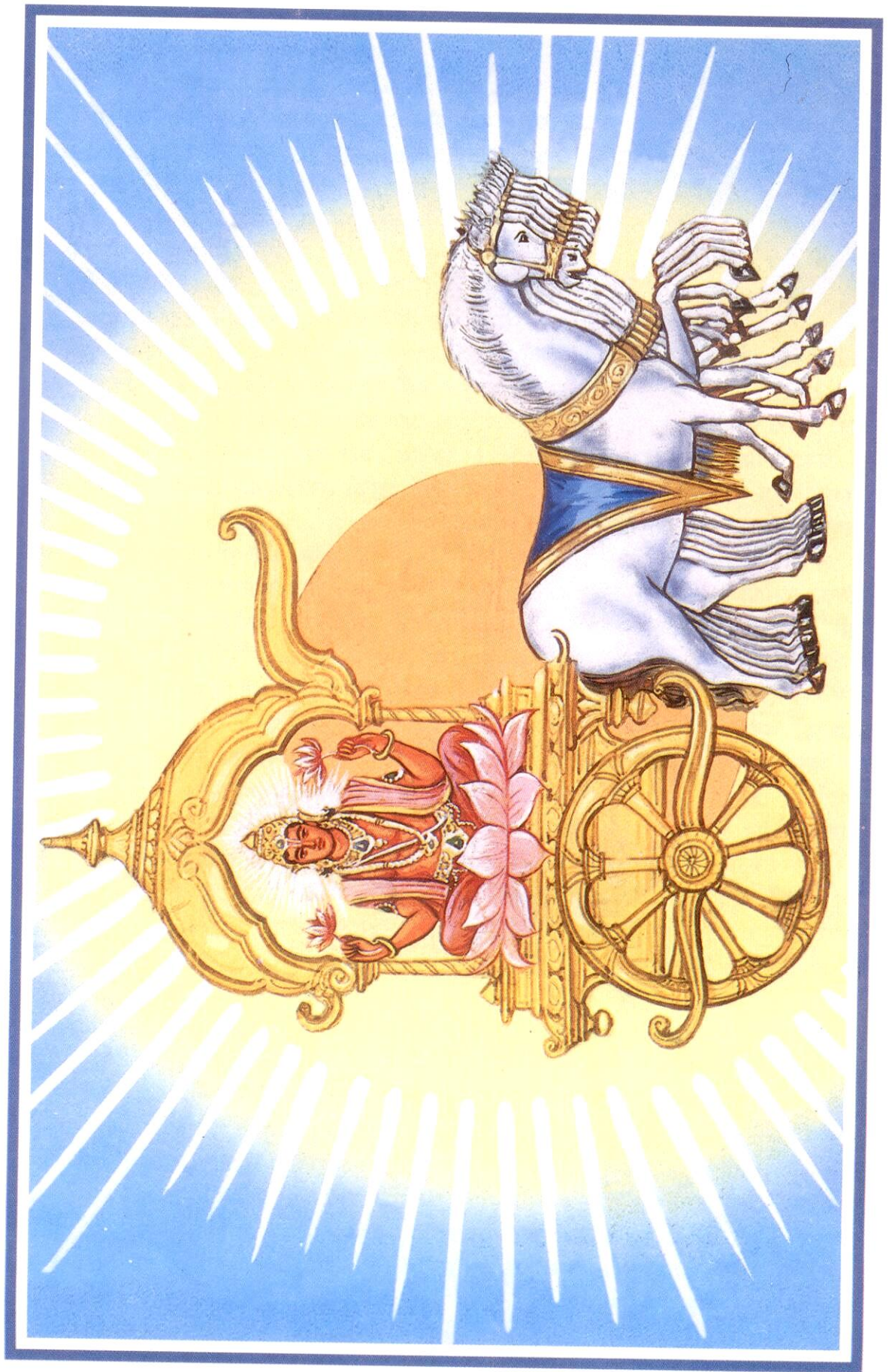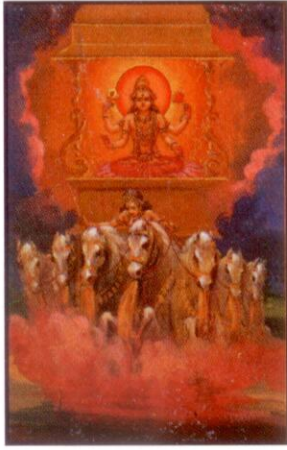
चन्द्रमा

चन्द्रदेवका वर्ण गौर है। इनके वस्त्र, अश्व और रथ तीनों श्वेत हैं। ये सुन्दर रथपर कमलके आसनपर विराजमान हैं। इनके सिरपर सुन्दर स्वर्णमुकुट तथा गलेमें मोतियोंकी माला है। इनके एक हाथमें गदा है और दूसरा हाथ वरमुद्रामें है।

श्रीमद्भागवतके अनुसार चन्द्रदेव महर्षि अत्रि और अनसूयाके पुत्र हैं। इनको सर्वमय कहा गया है। ये सोलह कलाओंसे युक्त हैं। इन्हें अन्नमय, मनोमय, अमृतमय पुरुषस्वरूप भगवान् कहा जाता है। आगे चलकर भगवान् श्रीकृष्णने इन्हींके वंशमें अवतार लिया था। इसीलिये वे चन्द्रकी सोलह कलाओंसे युक्त थे। चन्द्रदेवता ही सभी देवता, पितर, यक्ष, मनुष्य, भूत, पशु-पक्षी और वृक्ष आदिके प्राणोंका आप्यायन करते हैं।

प्रजापितामह ब्रह्माने चन्द्र देवताको बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणोंका राजा बना दिया। इनका विवाह अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी आदि दक्षकी सत्ताईस कन्याओंसे हुआ। ये सत्ताईस नक्षत्रोंके रूपमें भी जानी जाती हैं। (हरिवंशपुराण)

महाभारत वनपर्वके अनुसार चन्द्रदेवकी सभी पत्नियाँ शील और सौन्दर्यसे सम्पन्न हैं तथा पतिव्रत-धर्मका पालन करनेवाली हैं। इस तरह नक्षत्रोंके साथ चन्द्रदेवता परिक्रमा करते हुए सभी प्राणियोंके पोषणके साथ-साथ पर्व, संधियों एवं विभिन्न मासोंका विभाग किया करते हैं। पूर्णिमाको चन्द्रोदयके समय ताँबेके बर्तनमें मधुमिश्रित पकवान यदि चन्द्रदेवको अर्पित किया जाय तो इनकी तृप्ति होती है। उससे प्रसन्न होकर चन्द्रदेव सभी कष्टोंसे त्राण दिलाते हैं। इनकी तृप्तिसे आदित्य, विश्वेदेव, मरुद्गण और वायुदेव तृप्त होते हैं।

मत्स्यपुराणके अनुसार चन्द्रदेवका वाहन रथ है। इस रथमें तीन चक्र होते हैं। दस बलवान् घोड़े जुते रहते हैं। सब घोड़े दिव्य अनुपम और मनके समान वेगवान् हैं। घोड़ोंके नेत्र और कान भी श्वेत हैं। वे शंखके समान उज्ज्वल हैं।

चन्द्र देवताकी अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस पत्नियाँ हैं। इनके पुत्रका नाम बुध है, जो तारासे उत्पन्न हुए हैं। चन्द्रमाके अधिदेवता अप् और प्रत्यधिदेवता उमा देवी हैं। इनकी महादशा दस वर्षकी होती है तथा ये कर्क राशिके स्वामी हैं। इन्हें नक्षत्रोंका भी स्वामी कहा जाता है। नवग्रहोंमें इनका दूसरा स्थान है।

चन्द्रदेवकी प्रतिकूलतासे भौतिकरूपसे मनुष्यको मानसिक कष्ट तथा श्वास आदिके रोग होते हैं। इनकी प्रसन्नता और शान्तिके लिये सोमवारका व्रत, शिवोपासना करनी चाहिये तथा मोती धारण करना चाहिये। चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चाँदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, बैल, दही और मोती—ब्राह्मणको दान करना चाहिये। इनकी उपासनाके लिये वैदिक मन्त्र—'ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा॥', पौराणिक मन्त्र—'दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥', बीज मन्त्र—'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः' तथा सामान्य मन्त्र—'ॐ सों सोमाय नमः' है। इनमेंसे किसी भी मन्त्रका श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। कुल जप-संख्या ११००० तथा समय संध्याकाल है।

1018/B
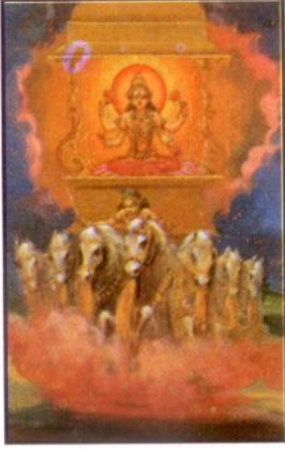
मंगल

मंगल देवताकी चार भुजाएँ हैं। इनके शरीरके रोयें लाल हैं। इनके हाथोंमें क्रमसे अभयमुद्रा, त्रिशूल, गदा और वरमुद्रा है। इन्होंने लाल मालाएँ और लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं। इनके सिरपर स्वर्णमुकुट है तथा ये मेख (भेड़ा)के वाहनपर सवार हैं।

वाराह कल्पकी बात है। जब हिरण्यकशिपुका बड़ा भाई हिरण्याक्ष पृथ्वीको चुरा ले गया था और पृथ्वीके उद्धारके लिये भगवान्ने वाराहावतार लिया तथा हिरण्याक्षको मारकर पृथ्वी देवीका उद्धार किया, उस समय भगवान्को देखकर पृथ्वी देवी अत्यन्त प्रसन्न हुईं और उनके मनमें भगवान्को पतिरूपमें वरण करनेकी इच्छा हुई। वाराहावतारके समय भगवान्का तेज करोड़ों सूर्योंकी तरह असह्य था। पृथ्वीकी अधिष्ठात्री देवीकी कामना पूर्ण करनेके लिये भगवान् अपने मनोरमरूपमें आ गये और पृथ्वी देवीके साथ दिव्य एक वर्षतक एकान्तमें रहे। उस समय पृथ्वी देवी और भगवान्के संयोगसे मंगल ग्रहकी उत्पत्ति हुई (ब्रह्मवैवर्तपुराण २। ८। २९ से ४३)। इस प्रकार विभिन्न कल्पोंमें मंगल ग्रहकी उत्पत्तिकी विभिन्न कथाएँ हैं। पूजाके प्रयोगमें इन्हें भरद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेशपुराणमें आयी है।

मंगल ग्रहकी पूजाकी पुराणोंमें बड़ी महिमा बतायी गयी है। यह प्रसन्न होकर मनुष्यकी हर प्रकारकी इच्छा पूर्ण करते हैं। भविष्यपुराणके अनुसार मंगलव्रतमें ताम्रपत्रपर भौमयन्त्र लिखकर तथा मंगलकी सुवर्णमयी प्रतिमाकी प्रतिष्ठाकर पूजा करनेका विधान है। मंगल देवताके नामोंका पाठ करनेसे ऋणसे मुक्ति मिलती है। यह अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्रगतिसे न चलें तो एक-एक राशिको तीन-तीन पक्षमें भोगते हुए बारह राशियोंको डेढ़ वर्षमें पार करते हैं।

मंगल ग्रहकी शान्तिके लिये शिव-उपासना तथा प्रवाल रत्न धारण करनेका विधान है। दानमें ताँबा, सोना, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केशर, कस्तूरी, लाल बृषभ, मसूरकी दाल तथा भूमि देना चाहिये। मंगलवारको व्रत करना चाहिये तथा हनुमानचालीसाका पाठ करना चाहिये। इनकी महादशा सात वर्षोंतक रहती है। यह मेष तथा वृश्चिक राशिके स्वामी हैं। इनकी शान्तिके लिये वैदिक मन्त्र—*'ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्‌ अपा\u0983 रेता\u0983 सि जिन्वति॥'*, पौराणिक मन्त्र—*'धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्॥'*, बीज मन्त्र*'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः'*, तथा सामान्य मन्त्र—*'ॐ अं अंगारकाय नमः'* है। इनमेंसे किसीका श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। कुल जप-संख्या १०००० तथा समय प्रातः आठ बजे है। विशेष परिस्थितिमें विद्वान् ब्राह्मणका सहयोग लेना चाहिये।
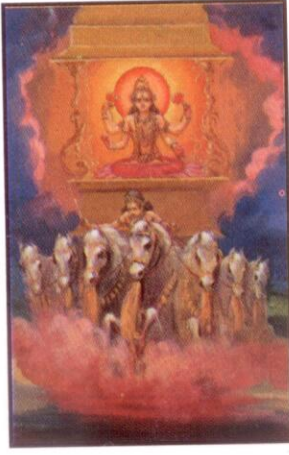
बुध

बुध पीले रंगकी पुष्पमाला तथा पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके शरीरकी कान्ति कनेरके पुष्पकी जैसी है। वे अपने चारों हाथोंमें क्रमशः—तलवार, ढाल, गदा और वरमुद्रा धारण किये रहते हैं। वे अपने सिरपर सोनेका मुकुट तथा गलेमें सुन्दर माला धारण करते हैं। उनका वाहन सिंह है।

अथर्ववेदके अनुसार बुधके पिताका नाम चन्द्रमा और माताका नाम तारा है। ब्रह्माजीने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्भागवतके अनुसार ये सभी शास्त्रोंमें पारंगत तथा चन्द्रमाके समान ही कान्तिमान् हैं। (मत्स्यपुराण २४। १-२) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्माने इन्हें भूतलका स्वामी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारतकी एक कथाके अनुसार इनकी विद्या-बुद्धिसे प्रभावित होकर महाराज मनुने अपनी गुणवती कन्या इलाका इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुधके संयोगसे महाराज पुरूरवाकी उत्पत्ति हुई। इस तरह चन्द्रवंशका विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्भागवत (५। २२-१३) के अनुसार बुध ग्रहकी स्थिति शुक्रसे दो लाख योजन ऊपर है। बुध ग्रह प्रायः मंगल ही करते हैं, किन्तु जब ये सूर्यकी गतिका उल्लङ्घन करते हैं, तब आँधी-पानी और सूखेका भय प्राप्त होता है।

मत्स्यपुराणके अनुसार बुध ग्रहका वर्ण कनेर पुष्पकी तरह पीला है। बुधका रथ श्वेत और प्रकाशसे दीप्त है। इसमें वायुके समान वेगवाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम—श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रहके अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान् विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशिके स्वामी हैं। इनकी महादशा १७ वर्षकी होती है।

बुध ग्रहकी शान्तिके लिये प्रत्येक अमावस्याको व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मणको हाथी दाँत, हरा वस्त्र, मूँगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस भोजन तथा घृतका दान करना चाहिये।

नवग्रह मण्डलमें इनकी पूजा ईशानकोणमें की जाती है। इनका प्रतीक वाण है तथा रंग हरा है। इनके जपका वैदिक मन्त्र—*'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥'*, पौराणिक मन्त्र—*'पियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥'*, बीज मन्त्र— *'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'*, तथा सामान्य मन्त्र— *'ॐ बुं बुधाय नमः'* है। इनमेंसे किसीका भी नित्य एक निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। जपकी कुल संख्या ९००० तथा समय ५ घड़ी दिन है। विशेष परिस्थितिमें विद्वान् ब्राह्मणका सहयोग लेना चाहिये।
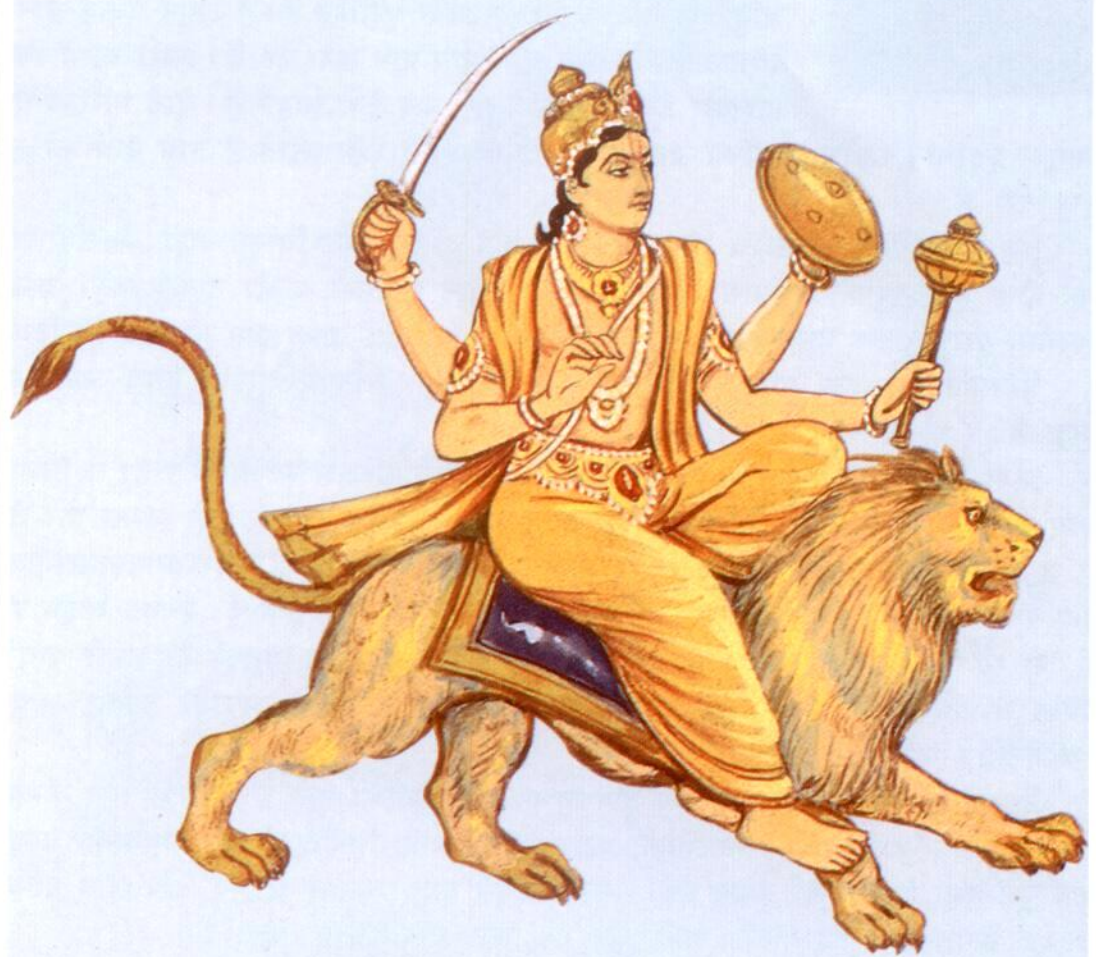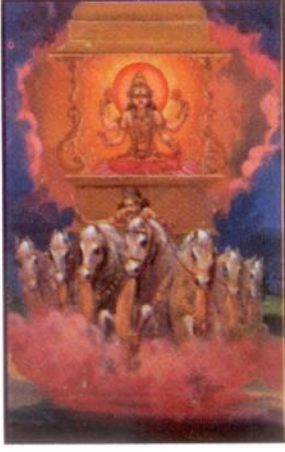
बृहस्पति

देवगुरु बृहस्पति पीत वर्णके हैं। उनके सिरपर स्वर्णमुकुट तथा गलेमें सुन्दर माला है। वे पीत वस्त्र धारण करते हैं तथा कमलके आसनपर विराजमान हैं। उनके चार हाथोंमें क्रमशः—दण्ड, रुद्राक्षकी माला, पात्र और वरदमुद्रा सुशोभित है।

महाभारत आदिपर्व एवं तै० सं० के अनुसार बृहस्पति महर्षि अङ्गिराके पुत्र तथा देवताओंके पुरोहित हैं। ये अपने प्रकृष्ट ज्ञानसे देवताओंको उनका यज्ञ-भाग प्राप्त करा देते हैं। असुर यज्ञमें विघ्न डालकर देवताओंको भूखों मार देना चाहते हैं। ऐसी परिस्थितिमें देवगुरु बृहस्पति रक्षोघ्न मन्त्रोंका प्रयोग कर देवताओंकी रक्षा करते हैं तथा दैत्योंको दूर भगा देते हैं।

इन्हें देवताओंका आचार्यत्व और ग्रहत्व कैसे प्राप्त हुआ, इसका विस्तृत वर्णन स्कन्दपुराणमें प्राप्त होता है। बृहस्पतिने प्रभास तीर्थमें जाकर भगवान् शङ्करकी कठोर तपस्या की। उनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर भगवान् शङ्करने उन्हें देवगुरुका पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करनेका वर दिया।

बृहस्पति एक-एक राशिपर एक-एक वर्ष रहते हैं। वक्रगति होनेपर इसमें अन्तर आ जाता है। (श्रीमद्भा० ५। २२। १५)

ऋग्वेदके अनुसार बृहस्पति अत्यन्त सुन्दर हैं। इनका आवास स्वर्णनिर्मित है। ये विश्वके लिये वरणीय हैं। ये अपने भक्तोंपर प्रसन्न होकर उन्हें सम्पत्ति तथा बुद्धिसे सम्पन्न कर देते हैं, उन्हें सन्मार्गपर चलाते हैं और विपत्तिमें उनकी रक्षा भी करते हैं। शरणागतवत्सलताका गुण इनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। देवगुरु बृहस्पतिका वर्ण पीत है। इनका वाहन रथ है, जो सोनेका बना है तथा अत्यन्त सुखकर और सूर्यके समान भास्वर है। इसमें वायुके समान वेगवाले पीले रंगके आठ घोड़े जुते रहते हैं। ऋग्वेदके अनुसार इनका आयुध सुवर्णनिर्मित दण्ड है।

देवगुरु बृहस्पतिकी एक पत्नीका नाम शुभा और दूसरीका तारा है। शुभासे सात कन्याएँ उत्पन्न हुईं—भानुमती, राका, अर्चिष्मती, महामती, महिष्मती, सिनीवाली और हविष्मती। तारासे सात पुत्र तथा एक कन्या उत्पन्न हुई। उनकी तीसरी पत्नी ममतासे भरद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। बृहस्पतिके अधिदेवता इन्द्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

बृहस्पति धनु और मीन राशिके स्वामी हैं। इनकी महादशा सोलह वर्षकी होती है। इनकी शान्तिके लिये प्रत्येक अमावास्याको तथा बृहस्पतिको व्रत करना चाहिये और पीला पुखराज धारण करना चाहिये। ब्राह्मणको दानमें पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि तथा छत्र देना चाहिये। इनकी शान्तिके लिये वैदिक मन्त्र—*'ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥'*, पौराणिक मन्त्र—*'देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥'*, बीज मन्त्र—*'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।'*, तथा सामान्य मन्त्र—*'ॐ बृं बृहस्पतये नमः'* है। इनमेंसे किसी एकका श्रद्धानुसार नित्य निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। जपका समय संध्याकाल तथा जप संख्या १९००० है।
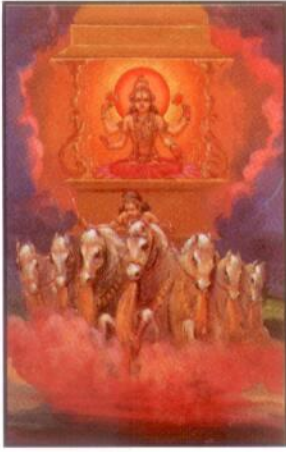
शुक्र

दैत्योंके गुरु शुक्रका वर्ण श्वेत है। उनके सिरपर सुन्दर मुकुट तथा गलेमें माला है। वे श्वेत कमलके आसनपर विराजमान हैं। उनके चार हाथोंमें क्रमशः—दण्ड, रुद्राक्षकी माला, पात्र तथा वरदमुद्रा सुशोभित रहती है।

शुक्राचार्य दानवोंके पुरोहित हैं। ये योगके आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवोंपर इनकी कृपा सर्वदा बरसती रहती है। इन्होंने भगवान् शिवकी कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। उसके बलसे ये युद्धमें मरे हुए दानवोंको जिला देते थे (महाभारत आदि० ७६। ८)।

मत्स्यपुराणके अनुसार शुक्राचार्यने असुरोंके कल्याणके लिये ऐसे कठोर व्रतका अनुष्ठान किया जैसा आजतक कोई नहीं कर सका। इस व्रतसे इन्होंने देवाधिदेव शङ्करको प्रसन्न कर लिया। शिवने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्धमें देवताओंको पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा। भगवान् शिवने इन्हें धनका भी अध्यक्ष बना दिया। इसी वरदानके आधारपर शुक्राचार्य इस लोक और परलोककी सारी सम्पत्तियोंके स्वामी बन गये।

महाभारत आदिपर्व (७८। ३९) के अनुसार सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य औषधियों, मन्त्रों तथा रसोंके भी स्वामी हैं। इनकी सामर्थ्य अद्भुत् है। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरोंको दे दी और स्वयं तपस्वी-जीवन ही स्वीकार किया।

ब्रह्माकी प्रेरणासे शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकोंके प्राणका परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, कभी अवृष्टि, कभी भय, कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियोंके योग-क्षेमका कार्य पूरा करते हैं। ये ग्रहके रूपमें ब्रह्माकी सभामें भी उपस्थित होते हैं। लोकोंके लिये ये अनुकूल ग्रह हैं तथा वर्षा रोकनेवाले ग्रहोंको शान्त कर देते हैं। इनके अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। मत्स्यपुराण (९४। ५) के अनुसार शुक्राचार्यका वर्ण श्वेत है। इनका वाहन रथ है, उसमें अग्निके समान आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथपर ध्वजाएँ फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। शुक्र वृष और तुला राशिके स्वामी हैं तथा इनकी महादशा २० वर्षकी होती है।

शुक्र ग्रहकी शान्तिके लिये गोपूजा करनी चाहिये तथा हीरा धारण करना चाहिये। चाँदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, चीनी, गौ तथा भूमि ब्राह्मणको दान देना चाहिये।

नवग्रह मण्डलमें शुक्रका प्रतीक पूर्वमें श्वेत पंचकोण है। शुक्रकी प्रतिकूल दशामें इनकी अनुकूलता और प्रसन्नताहेतु वैदिक मन्त्र—*'ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥'*, पौराणिक मन्त्र—*'हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥'* *बीज मन्त्र—'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'*, तथा सामान्य मन्त्र—*'ॐ शुं शुक्राय नमः'* है। इनमेंसे किसी एकका नित्य एक निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। कुल जप-संख्या १६००० तथा जपका समय सूर्योदयकाल है। विशेष अवस्थामें विद्वान् ब्राह्मणका सहयोग लेना चाहिये।
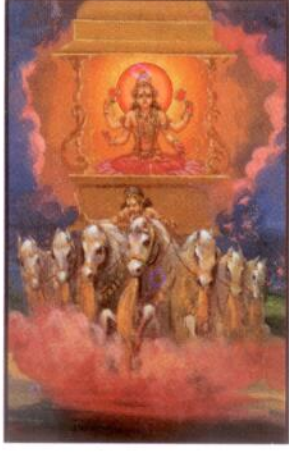
शनि

शनैश्चरकी शरीर-कान्ति इन्द्रनीलमणिके समान है। इनके सिरपर स्वर्णमुकुट गलेमें माला तथा शरीरपर नीले रंगके वस्त्र सुशोभित हैं। ये गीधपर सवार रहते हैं। हाथोंमें क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।'

शनि भगवान् सूर्य तथा छाया (संवर्णा)के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टिमें जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नीके शापके कारण है। ब्रह्मपुराणमें इनकी कथा इस प्रकार आयी है—बचपनसे ही शनि देवता भगवान् श्रीकृष्णके परम भक्त थे। वे श्रीकृष्णके अनुरागमें निमग्न रहा करते थे। वयस्क होनेपर इनके पिताने चित्ररथकी कन्यासे इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती- साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र-प्राप्तिकी इच्छासे इनके पास पहुँची, पर यह श्रीकृष्णके ध्यानमें निमग्न थे। इन्हें बाह्य संसारकी सुधि ही नहीं थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसलिये उसने क्रुद्ध होकर शनिदेवको शाप दे दिया कि आजसे जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायगा। ध्यान टूटनेपर शनिदेवने अपनी पत्नीको मनाया। पत्नीको भी अपनी भूलपर पश्चात्ताप हुआ, किन्तु शापके प्रतीकारकी शक्ति उसमें न थी, तभीसे शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे। क्योंकि यह नहीं चाहते थे कि इनके द्वारा किसीका अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्रके अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी-शकट भेदन कर दे तो पृथ्वीपर बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ जाय और प्राणियोंका बचना ही कठिन हो जाय। शनि ग्रह जब रोहिणीका भेदन कर बढ़ जाता है, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथके समयमें आनेवाला था। जब ज्योतिषियोंने महाराज दशरथसे बताया कि यदि शनिका योग आ जायगा तो प्रजा अन्न-जलके बिना तड़प-तड़पकर मर जायगी। प्रजाको इस कष्टसे बचानेके लिये महाराज दशरथ अपने रथपर सवार होकर नक्षत्रमण्डलमें पहुँचे। पहले तो महाराज दशरथने शनि देवताको नित्यकी भाँति प्रणाम किया और बादमें क्षत्रिय-धर्मके अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उनपर संहारास्त्रका संधान किया। शनि देवता महाराजकी कर्तव्यनिष्ठासे परम प्रसन्न हुए और उनसे वर माँगनेके लिये कहा। महाराज दशरथने वर माँगा कि जबतक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तबतक आप शकट-भेदन न करें। शनिदेवने उन्हें वर देकर संतुष्ट कर दिया।

शनिके अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गीध तथा रथ लोहेका बना हुआ है। यह एक-एक राशिमें तीस-तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुम्भ राशिके स्वामी हैं तथा इनकी महादशा १९ वर्षकी होती है। इनकी शान्तिके लिये मृत्युञ्जय-जप, नीलम-धारण तथा ब्राह्मणको तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली गौ, जूता, कस्तूरी और सुवर्णका दान देना चाहिये। इनके जपका वैदिक मन्त्र—*'ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥'* , पौराणिक मन्त्र—*'नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामी शनैश्चरम्॥'* बीज मन्त्र—*'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।'*, तथा सामान्य मन्त्र—*'ॐ शं शनैश्चराय नमः'* है। इनमेंसे किसी एकका श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। जपका समय संध्याकाल तथा कुल संख्या २३००० होनी चाहिये।
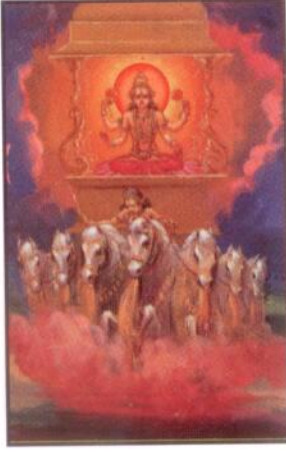
राहु

राहुका मुख भयंकर है। ये सिरपर मुकुट, गलेमें माला तथा शरीरपर काले रंगका वस्त्र धारण करते हैं। इनके हाथोंमें क्रमशः—तलवार, ढाल, त्रिशूल और वरमुद्रा है तथा ये सिंहके आसनपर आसीन हैं। ध्यानमें ऐसे ही राहु प्रशस्त माने गये हैं।

राहुकी माताका नाम सिंहिका है, जो विप्रचित्तिकी पत्नी तथा हिरण्यकशिपुकी पुत्री थी। माताके नामसे राहुको सैंहिकेय भी कहा जाता है। राहुके सौ और भाई थे, जिनमें राहु सबसे बढ़ा-चढ़ा था (श्रीमद्भागवत ६। ६। ३६)।

जिस समय समुद्रमंथनके बाद भगवान् विष्णु मोहिनीरूपमें देवताओंको अमृत पिला रहे थे, उसी समय राहु देवताओंका वेष बनाकर उनके बीचमें आ बैठा और देवताओंके साथ उसने भी अमृत पी लिया। परन्तु तत्क्षण चन्द्रमा और सूर्यने उसकी पोल खोल दी। अमृत पिलाते-पिलाते ही भगवान्ने अपने तीखी धारवाले सुदर्शन चक्रसे उसका सिर काट डाला। अमृतका संसर्ग होनेसे वह अमर हो गया और ब्रह्माजीने उसे ग्रह बना दिया (श्रीमद्भागवत ८। ९। २६)।

महाभारत भीष्मपर्व (१२। ४०) के अनुसार राहु ग्रह मण्डलाकार होता है। ग्रहोंके साथ राहु भी ब्रह्माकी सभामें बैठता है। मत्स्यपुराण (२८। ६१) के अनुसार पृथ्वीकी छाया मण्डलाकार होती है। राहु इसी छायाका भ्रमण करता है। यह छायाका अधिष्ठातृ देवता है। ऋग्वेद (५। ४०। ५) के अनुसार असूया (सिंहिका) पुत्र राहु जब सूर्य और चन्द्रमाको तमसे आच्छन्न कर लेता है, तब इतना अंधेरा छा जाता है कि लोग अपने स्थानको भी नहीं पहचान पाते। ग्रह बननेके बाद भी राहु वैर-भावसे पूर्णिमाको चन्द्रमा और अमावस्याको सूर्यपर आक्रमण करता है। इसे ग्रहण या राहु पराग कहते हैं। मत्स्यपुराणके अनुसार राहुका रथ अन्धकाररूप है। इसे कवच आदिसे सजाये हुए काले रंगके आठ घोड़े खींचते हैं। राहुके अधिदेवता काल तथा प्रत्यधिदेवता सूर्य हैं। नवग्रहमण्डलमें इसका प्रतीक वायव्यकोणमें काला ध्वज है।

राहुकी महादशा १८ वर्षकी होती है। अपवादस्वरूप कुछ परिस्थितियोंको छोड़कर यह क्लेशकारी ही सिद्ध होता है। ज्योतिषशास्त्रके अनुसार यदि कुण्डलीमें राहुकी स्थिति प्रतिकूल या अशुभ है तो यह अनेक प्रकारकी शारीरिक व्याधियाँ उत्पन्न करता है। कार्यसिद्धिमें बाधा उत्पन्न करनेवाला तथा दुर्घटनाओंका यह जनक माना जाता है।

राहुकी शान्तिके लिये मृत्युञ्जय-जप तथा पिरोजा धारण करना श्रेयस्कर है। इसके लिये अभ्रक, लोहा, तिल, नीला वस्त्र, ताम्रपात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, तेल, कम्बल, घोड़ा तथा खड्गका दान करना चाहिये। इसके जपका वैदिक मन्त्र—'*ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥*', पौराणिक मन्त्र—'*अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिहिंकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥*', बीज मन्त्र—'*ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः*' तथा सामान्य मन्त्र—'*ॐ रां राहवे नमः*' है। इसमेंसे किसी एकका निश्चित संख्यामें नित्य जप करना चाहिये। जपका समय रात्रि तथा कुल संख्या १८००० है।
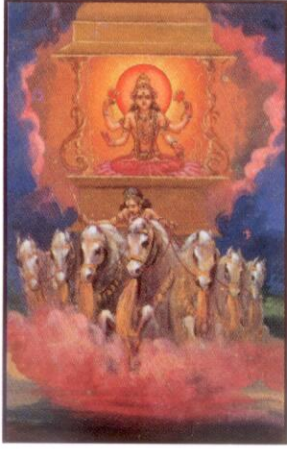
केतु

केतुकी दो भुजाएँ हैं। वे अपने सिरपर मुकुट तथा शरीरपर काला वस्त्र धारण करते हैं। उनका शरीर धूम्रवर्णका है तथा मुख विकृत है। वे अपने एक हाथमें गदा और दूसरेमें वरमुद्रा धारण किये रहते हैं तथा नित्य गीधपर समासीन हैं।

भगवान् विष्णुके चक्रसे कटनेपर सिर राहु कहलाया और धड़ केतुके नामसे प्रसिद्ध हुआ। केतु राहुका ही कबन्ध है। राहुके साथ केतु भी ग्रह बन गया। मत्स्यपुराणके अनुसार केतु बहुत-से हैं, उनमें धूमकेतु प्रधान है।

भारतीय-ज्योतिषके अनुसार यह छायाग्रह है। व्यक्तिके जीवन-क्षेत्र तथा समस्त सृष्टिको यह प्रभावित करता है। आकाश-मण्डलमें इसका प्रभाव वायव्यकोणमें माना गया है। कुछ विद्वानोंके मतानुसार राहुकी अपेक्षा केतु विशेष सौम्य तथा व्यक्तिके लिये हितकारी है। कुछ विशेष परिस्थितियोंमें यह व्यक्तिको यशके शिखरपर पहुँचा देता है। केतुका मण्डल ध्वजाकार माना गया है। कदाचित् यही कारण है कि यह आकाशमें लहराती ध्वजाके समान दिखायी देता है। इसका माप केवल छः अंगुल है।

यद्यपि राहु-केतुका मूल शरीर एक था और वह दानव-जातिका था। परन्तु ग्रहोंमें परिगणित होनेके पश्चात् उनका पुनर्जन्म मानकर उनके नये गोत्र घोषित किये गये। इस आधारपर राहु पैठीनस-गोत्र तथा केतु जैमिनि-गोत्रका सदस्य माना गया। केतुका वर्ण धूम्र है। कहीं-कहीं इसका कपोत वाहन भी मिलता है।

केतुकी महादशा सात वर्षकी होती है। इसके अधिदेवता चित्रकेतु तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं। यदि किसी व्यक्तिकी कुण्डलीमें केतु अशुभ स्थानमें रहता है तो वह अनिष्टकारी हो जाता है। अनिष्टकारी केतुका प्रभाव व्यक्तिको रोगी बना देता है। इसकी प्रतिकूलतासे दाद, खाज तथा कुष्ठ जैसे रोग होते हैं।

केतुकी प्रसन्नताहेतु दान की जानेवाली वस्तुएँ इस प्रकार बतायी गयीं हैं।

वैदूर्य रत्नं तैलं च तिलं कम्बलमर्पयेत्।
शस्त्रं मृगमदं नीलपुष्पं केतुग्रहाय वै॥

वैदूर्य नामक रत्न, तेल, काला तिल, कम्बल, शस्त्र, कस्तूरी तथा नीले रंगका पुष्प दान करनेसे केतु ग्रह साधकका कल्याण करता है। इसके लिये लहसुनिया पत्थर धारण करने तथा मृत्युञ्जय जपका भी विधान है। नवग्रह मण्डलमें इसका प्रतीक वायव्यकोणमें काला ध्वज है।

केतुकी शान्तिके लिये वैदिक मन्त्र—*'ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। सुमुषद्भिरजायथाः॥'*, पौराणिक मन्त्र— *'पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥'*, बीज मन्त्र— *'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।'*, तथा सामान्य मन्त्र—*'ॐ कें केतवे नमः'* है। इसमें किसी एकका नित्य श्रद्धापूर्वक निश्चित संख्यामें जप करना चाहिये। जपका समय रात्रि तथा कुल जप-संख्या १७००० है। हवनके लिये कुशका उपयोग करना चाहिये। विशेष परिस्थितिमें विद्वान् ब्राह्मणका सहयोग लेना चाहिये।

नवग्रहका ध्यान

सूर्य— पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भःसमद्युतिः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदारविः॥
चन्द्रमा— श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥
मंगल— रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥
बुध— पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
बृहस्पति—देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शुक्र— दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शनि— इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥
राहु— करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते॥
केतु— धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपुराण ९४। १—९)

नवग्रह-कवच

नीचे 'यामलतन्त्र'का एक 'नवग्रह-कवच' दिया जा रहा है। इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करने तथा इसे ताबीजमें रखकर भुजामें धारण करनेसे बहुत लाभ होता है।

ॐ शिरो मे पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणीपतिः।
मुखमङ्गारकः पातु कण्ठं च शशिनन्दनः॥
बुद्धिं जीवः सदा पातु हृदयं भृगुनन्दनः।
जठरं च शनिः पातु जिह्वां मे दितिनन्दनः॥
पादौ केतुः सदा पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च।
तिथयोऽष्टौ दिशः पातु नक्षत्राणि वपुः सदा॥
अंसौ राशिः सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च।
सुचिरायुः सुखी पुत्री युद्धे च विजयी भवेत्।
रोगात्प्रमुच्यते रोगी बन्धो मुच्येत बन्धनात्॥
श्रियं च लभते नित्यं रिष्टिस्तस्य न जायते।
यः करे धारयेन्नित्यं तस्य रिष्टिर्न जायते॥
पठनात् कवचस्यास्य सर्वपापात् प्रमुच्यते।
मृतवत्सा च या नारी काकवन्ध्या च या भवेत्॥
जीववत्सा पुत्रवती भवत्येव न संशयः।
एतां रक्षां पठेद् यस्तु अङ्गं स्पृष्ट्वापि वा पठेत्॥

सं० २०६६ सत्रहवाँ पुनर्मुद्रण १०,०००
कुल मुद्रण ३,०२,५००

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)

मूल्य—१० रु०
(दस रुपये)

ISBN 81-293-0470-8

फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
e-mail : **booksales@gitapress.org** website : **www.gitapress.org**

Code 1018